

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

भवानी-स्तुति



दुसह दोष-दुख, दलनि, करु देवि दाया ।

विश्व-मूलाऽसि, जनसानुकूलाऽसि, कर शूलधारिणि महामूलमाया ॥1॥

तडित गर्भांग सर्वांग सुंदर लसत, दिव्य पट भव्य भूषण विराजें ।

बालमृग-मंजु खंजन-विलोचनि चंद्रवदनि लखि कोटि रतिमार लाजें ॥2॥

रूप- सुख-शील-सीमाऽसि, भीमाऽसि , रामाऽसि, वामाऽसि वर बुद्धि बानी ।

छमुख-हेरम्ब-अम्बासि, जगदम्बिके , शंभु-जायासि जय जय भवानी ॥3॥

चंड-भुजदण्ड-खंडनि बिहंडनि महिष मुंड-मद-भंग कर अंग तोरे ।

शुंभ - निःशुंभ कुम्भीश रण- केशरिणि, क्रोध-वारीश अरि-वृंद बोरे ॥4॥

निगम-आगम - अगम गुर्वि! तव गुन -कथन, उर्विधर करत जेहि सहसजीहा ।

देहि मा, मोहि पन प्रेम यह नेम निज, राम घनश्याम तुलसी पपीहा ॥5॥